यूहन्ना रचित सुसमाचार का एक परिचय

डोनल्ड गुथ्री ने अपनी पुस्तक *न्यू टैस्टामेंट इन्ट्रोडक्शन* में, यूहन्ना रचित सुसमाचार की पृष्ठभूमि में ही लगभग एक सौ पन्नों पर बहुत से मुद्दों का उल्लेख किया है। नीचे गुथ्री के निष्कर्षों के साथ उन मुद्दों का सार दिया गया है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार की विलक्षण विशेषताएं

पुराने नियम का स्थान। यीशु की कहानी पुराने नियम की वाचा के शब्दों, चरित्रों तथा प्रतिज्ञाओं द्वारा समझाई जाती है। निकुदेमुस ने यीशु को एक यहूदी गुरु के रूप में देखा (3:2), और यीशु ने अपने विरोधियों को उत्तर देने के लिए पुराने नियम के धर्मशास्त्र का इस्तेमाल किया (10:34)। अच्छे चरवाहे की पुराने नियम की तस्वीर की तरह ही यूहन्ना द्वारा यीशु की प्रस्तुति में भी मूसा और अब्राहम प्रमुख लोग हैं।

> ... हमारा प्रभु तथा सुसमाचार प्रचारक दोनों ही पुराने नियम की अपनी टिप्पणियों की पुष्टि करते हैं कि हर आयत मसीह की ओर ही संकेत करती है। वह पुराने नियम की परिपूर्णता है, और इस तथ्य से हमें सुसमाचार की धारणाओं की व्याख्या करने में अगुआई मिलनी चाहिए है।[1]

पवित्र आत्मा के बारे में शिक्षा। सुसमाचार की किसी अन्य पुस्तक की तुलना में यूहन्ना रचित सुसमाचार में पवित्र आत्मा के बारे में अधिक बताया गया है। निकुदेमुस के साथ यीशु की चर्चा में पवित्र आत्मा का महत्वपूर्ण योगदान है और यूहन्ना 14 से 17 अध्याय में यीशु के विदाई संदेश का इससे भी अधिक महत्वपूर्ण योगदान है। सुसमाचार की इस पुस्तक में लिखित यीशु के शब्दों से यह स्पष्ट हो गया कि पिता के पास उसके उठाए जाने के बाद ही पवित्र आत्मा ने उसके चेलों को सांत्वना देने वाले के रूप में आना था।

बड़े विषय-वस्तुओं की व्याप्तता। यह अहसास कराने के लिए कि सुसमाचार की इस पुस्तक की विशेषता महान विषयों के इसके विकास से है, केवल ''जीवन,'' ''ज्योति,'' ''प्रेम,'' ''विश्वास,'' ''मैं हूं'' और ''सच्चाई'' जैसे और वाक्यांशों का ही उल्लेख काफी है। बेशक इनमें से कुछ सुसमाचार की दूसरी पुस्तकों में भी मिलते हैं परन्तु सुसमाचार की यूहन्ना द्वारा लिखित पुस्तक जैसा व्यवहार उनके साथ मत्ती, मरकुस या लूका में नहीं होता।

लहर की तुलनात्मक कमी। सुसमाचार की इस पुस्तक में उस पर अधिक लिखा गया है जो कुछ यीशु ने कहा, इसलिए इसमें यीशु के कामों से सम्बन्धित बहुत कम सामग्री है। परन्तु लहर का पूरी तरह से अभाव नहीं है और यूहन्ना ने सुसमाचार की अन्य किसी भी पुस्तक से अधिक यरूशलेम में यीशु के जाने का उल्लेख किया है।

यीशु का चित्र। समानांतर सुसमाचारों के विपरीत यूहन्ना रचित सुसमाचार ''मुनष्य का पुत्र'' शीर्षक का इस्तेमाल कम करता है, यीशु और पिता परमेश्वर के सम्बन्ध के बारे में अधिक बताता है और यहूदी मसीह के रूप में यीशु की भूमिका को स्पष्ट करता है। यूहन्ना यीशु के मनुष्य होने के बारे में भी बहुत कुछ कहता है। काना में हमें पारिवारिक झगड़े में यीशु की झलक मिलती है। सूखार के निकट कुएं पर हम उसे थका हुआ, बैतनिय्याह में परेशान तथा रोते हुए और क्रूस पर प्यासा देखते हैं।

लिखने वाला

लेखक ने वे सब घटनाएं जो उसने लिखीं, अपनी आंखों से देखी थीं (1:14)। स्पष्टतया वह यीशु का बारह में से एक वही चेला था ''जिससे यीशु प्रेम रखता था'' (21:20, 24)।

लेखक को यहूदी रीति-रिवाज़ों का विस्तृत ज्ञान था (2:6; 7:37; 18:28; 19:31-42)। वह यहूदी इतिहास से भी भलीभांति परिचित था (मन्दिर का बनाया जाना, लोगों के राजनीतिक व्यवहार, महायाजक की भूमिका और उत्तराधिकार आदि)। इसके अतिरिक्त वह यरूशलेम और ग्रामीण क्षेत्र में भी फलस्तीन के भूगोल से परिचित था। गुथ्री ने निष्कर्ष निकाला:

> यह [विश्वास कि यूहन्ना रचित सुसमाचार को प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखा गया था] ... एक पारम्परिक विचार है जो आंतरिक प्रमाण के लिए काफी सहायक है। वास्तव में यह कहा जा सकता है कि ऐसा कोई प्रमाण नहीं है जो इतने विरोध के बावजूद निर्णायक ढंग से इसे गलत सिद्ध कर दे। पूरे तौर पर, यह विचार किसी भी दूसरे तथ्य से अधिक माना जाएगा, यद्यपि ऐसा बिना कठिनाइयों के नहीं होगा।[2]

उद्देश्य

बाइबल की हर पुस्तक का उद्देश्य उसका अध्ययन करने वालों की चर्चा का मुद्दा रहा ही है। यूहन्ना रचित सुसमाचार का उद्देश्य विलक्षण है। लेखक ने स्वयं लिखा है:

> यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के साम्हने दिखाए, जो इस पुस्तक में नहीं लिखे गए। परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो, कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है: और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ (यूहन्ना 20:30, 31)।

बेशक दूसरे बहुत से सम्बन्धित मुद्दे सुसमाचार की इस पुस्तक में सम्बोधित किए गए हैं परन्तु लेखक के उद्देश्य के रूप में हम जो भी देखें उसमें विश्वास का पैदा होना और बढ़ना अवश्य होना चाहिए।

समय

एक समय था जब बहुत से विद्वान दावा करते थे कि यूहन्ना रचित सुसमाचार दूसरी शताब्दी के अन्तिम भाग में लिखा गया होना चाहिए। निश्चय ही, इससे प्रेरित यूहन्ना के अलावा कोई और हो जाएगा और इसका अर्थ यह होगा कि वह लेखक यीशु की सेवकाई का चश्मदीद नहीं था। परन्तु, 1934 में मेनचैस्टर, इंग्लैण्ड की जॉन रेलैण्ड्स लाइब्रेरी में एक पैपरस का भाग मिला जिसमें यूहन्ना 18:31-33, 37, 38 लिखा था (1920 में इसे मिसर से इंग्लैण्ड लाया गया)। विशेषज्ञों ने इसका समय दूसरी शताब्दी की पहली चौथाई से लगभग 125 ईस्वी तक का बताया। इसका अर्थ यह है कि 125 ईस्वी तक यूहन्ना रचित सुसमाचार के बारे में नील नदी के दूरस्थ क्षेत्र के लोग जानते थे। मूल लेख इससे कितना समय पहले लिखा गया, पक्का नहीं कहा जा सकता।

यदि, जैसा कि पहले पुष्टि की गई है, प्रेरित यूहन्ना ने सुसमाचार के इस भाग को लिखा तो यह समय सम्भवत: 90 और 100 ईस्वी के बीच रहा होगा।

यूहन्ना रचित सुसमाचार तथा समानांतर सुसमाचारों में सम्बन्ध

समानताएं

समानांतर सुसमाचारों[3] की तरह ही यूहन्ना रचित सुसमाचार में भी यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की कहानी है। सुसमाचार के सभी वृत्तांतों में चेलों को बुलाने और पांच हज़ार लोगों को यीशु द्वारा भोजन खिलाने का वर्णन किया गया है।

अन्य वृत्तांतों के साथ, यूहन्ना रचित सुसमाचार यरूशलेम में यीशु के विजयी प्रवेश के बारे में बताया गया है। इसी प्रकार, पतरस के इन्कार करने की सारी बातें भी शामिल हैं। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है, चारों लेखक यीशु के मुकदमे, क्रूस पर चढ़ाए जाने और पुनरुत्थान की जानकारी देते हैं।

अन्तर

यीशु की वंशावली, कुंवारी से जन्म, यीशु का बपतिस्मा और परीक्षा, रूपांतरण, सभी दृष्टांत, प्रभु भोज की स्थापना, गतसमनी में संघर्ष, स्वर्ग पर ऊपर उठाया जाना समानांतर सुसमाचारों में तो हैं परन्तु उनका वर्णन यूहन्ना रचित सुसमाचार में नहीं है। यूहन्ना रचित सुसमाचार की बातें जिनका वर्णन समानांतर सुसमाचारों में नहीं है, जल प्रलय, यहूदिया में यीशु की सेवकाई, निकुदेमुस और सामरी स्त्री के साथ उसकी बातचीत, लाज़र को जिलाना, चेलों के पांव धोना। यूहन्ना रचित सुसमाचार में बहुत सी विस्तृत शिक्षाएं हैं जो समानांतर

सुसमाचारों में नहीं हैं। सुसमाचार की पुस्तकों में यीशु के साथ सत्ताईस वार्तालाप हैं, और उनमें से अधिकतर यूहन्ना की पुस्तक में मिलते हैं।[4]

यूहन्ना व सुसमाचार के अन्य वृत्तांतों में पाए जाने वाले बड़े कालक्रमिक अन्तर हैं। मुख्य अन्तर यह है कि समानांतरों में यीशु की सार्वजनिक सेवकाई को केवल गलील में ही दिखाया गया है, जिसमें यीशु के यरूशलेम में क्रूस पर मरने के लिए जाने के समय का ही वर्णन है। इसकी तुलना में, यूहन्ना रचित सुसमाचार में उसके यरूशलेम में कई बार जाने का वर्णन है (2:13; 5:1; 7:10)।

पाद टिप्पणियां

[1]डोनल्ड गुथ्री, *न्यू टैस्टामेंट इन्ट्रोडक्शन,* संशो. सं. (डाउनर्स ग्रोव, III.: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1970), 238. [2]वहीं। [3]"सुसमाचार की पहली तीन पुस्तकों मत्ती, मरकुस और लूका को समानांतर सुसमाचार (अर्थात सिनोप्टिक गॉस्पल्स) कहा जाता है क्योंकि उनमें एक साधारण दृष्टिकोण से मसीह के जीवन की समीक्षा है (समानांतर के लिए अंग्रेज़ी शब्द synoptic के संधि विच्छेद हैं *sun* अर्थात *के साथ;* opsis अर्थात देखना। इस प्रकार इन तीनों पुस्तकों में यीशु की तस्वीर लगभग एक जैसी ही लगती है)" (डब्ल्यू. ग्राहम स्क्रोगी, *ए गाइड टू द गॉस्पल्स* [ओल्ड टैपन, न्यू ज.: फ्लेमिंग एच. रेवल कं., 1962], 83)। [4]रॉबर्ट जी. ग्रोमकी, *न्यू टैस्टामेंट सर्वे* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1974), 135.